अन्तरा-शब्दशक्ति

# दर्द जख्मों के

(काव्य संग्रह)

रमा-प्रेम-शांति

# दर्द ज़ख्मों के

(काव्य संग्रह)

# रमा प्रेम शांति

**अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन**
**वारासिवनी, मध्यप्रदेश**

ISBN- "978-93-86666-85-7"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- रमा प्रेम शांति
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
DARD ZAKHMON KE BY RAMA PREM SHANTI
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

# अनुक्रमणिका


1. भूमिका 5
2. नारी 7
3. कैसे रोक लगाऊँ जरा 8
4. अनपढ़ बेटी 9
5. अनाथ बच्चे 10
6. मासूम रिश्ते 11
7. नीचे उतर आओ माँ 12
8. देश को समृद्ध बनाए 13
9. कीमत 14
10. बचपन 15
11. बेटी होती खुशियों का खजाना 16
12. किताब 17
13. उनकी यादें 18
14. संस्कार 19
15. चाँद पूर्णिमा का 20
16. अपनों ने जीना सिखाया हैं 21
17. गुरूओं को समर्पित 22
18. जरूरत 23
19. खेल - मेरे ईश्वर मेरे अल्लाह 24
20. उजाला 25
21. पुलवामा अमर शहीदो को नमन 26
22. हादसे 27
23. खुद से वादा 28

24. दुश्मनी फैल रही 29
25. न्याय के खुदा से विनती 30
26. संकल्प 31
27. माँ का दामन 32

# भूमिका

## -दर्द जख्मो के -

सम्मानीय पाठको आपको नमन करते हुए आपके समक्ष साहित्य लेखन के माध्यम से समाज की अतीत एंव वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए अपनी पुस्तक प्रस्तुत कर रही हूँ। जिसे पढकर आप भी जरूर दर्द को महसूस करेंगे ही नहीं, बल्कि मेरी भावनाओ को समझने की पूरी कोशिश करेंगे, यकीनन तभी मेरा लिखना भी सार्थक होगा ।

क्योंकि इस पुस्तक में रखे मेरे भाव किसी एक व्यक्ति, जाति, समाज, धर्म के लिए नहीं अपितु जो इस पीड़ा से जूझ रहे है उसको केन्द्रित कर लिखने का भरपूर प्रयास किया है। इसमें समाहित मेरी रचना भारतीय समाज में हुआ, हो रहा उसी को माध्यम बनाकर लिखा, ना कि किसी को आहत करने के उद्देश्य से, इसी कारण यह पूरी तरह पद्य ना होते हुए गद्य का ज्यादा आवरण ओढ़े हुए है।

मैं चाहती हूँ, अगर आप मेरी भावनाओ को समझ गए है तो देर किस बात की, हम सब मिलकर हमारे देश में फैली कुरीतियाँ, परम्पराओं, भेदभाव आदि की ऊंची दीवार को पूरी तरह गिराकर नफरत की बिम्ब को तोड़कर प्रेम की नींव सब मिलकर रखे, तब कहीं हमारा सपना भारत को विश्व गुरु बनने का साकार होते हुए देख पायेंगे।

-पहला धर्म हर जाति की नारी का सम्मान,-

-दूजा धर्म हर वर्ग को समझो एक समान,-
-नहीं रखो कोई भेदभाव, छल कपट तुम आज ,-
- तभी बनेगा विश्व गुरू व भारत देश फिर महान।-

**-रमा प्रेम शांति-**
**बालाघाट**

# नारी

मत बाँटो नारी को जाति-पाति में,
नारी तो नारी होती है जात, नारी है।

सृष्टि की एकमात्र यही तो जननी है,
नफरत की जमीं पर यही प्रेम तो बोती है।

बहन तो, कोई पत्नी तो कोई बेटी होती है।
देती जन्म वो माँ भी तो नारी होती है।

भारत में ही पूजी जाती देवी रूप वो भी नारी है।
फिर क्यों होता बलात्कार, आखिर वो भी तो नारी है।

क्यों नहीं मिलकर पकड़वाते,
बलात्कारी को जो सब नारी है।

# कैसे रोक लगाऊँ जरा

चल रही है आज जो,
हर दिल में बस नफरत की आँधी,
उस पे कैसे रोक लगाऊँ जरा।
बो रहे है, आज जो, तेजी से नसो में बीज,
भेदभाव के यहाँ इनकी
कटाई पे कैसे रोक लगाऊँ जरा।
करे तितर-बितर बड़े जो,
चिंता नहीं आज जिन्हे,
भारतीय समाज को उनकी,
सोच पे कैसे रोक लगाऊँ जरा।
चुराए है आज जो दूसरो की कलाओ को
और अपना नाम बताए उनकी
हरकत पे कैसे रोक लगाऊँ जरा।
शहीदो को आज जो बाँटते है, जाति-धर्म में
ऐसे गद्दार लोगों की फौज पे कैसे रोक लगाऊँ जरा।
कोई मुझे बताए जरा, देश की सुख-शांति के लिए
कहाँ-कहाँ मैंअपनी अर्जी लगाऊँ जरा।

# अनपढ़ बेटी

मैं ही बदनसीब हूँ, माँ,
अब तो मेरे जीवन की चिंता मेरे साथ-साथ,
आपको भी जिंदगी भर रहेगी ना,

काश
उस समय मैं भी जिद्द से
पढ़ लिख लेती, या फिर तुम ही
मेरे पीछे पड़ पढ़ाई का महत्व बतला देती,

तो शायद ये दिन न देखने पड़ते  मुझे,
मुझमें भी निर्णय लेने की क्षमता होती,

कुछ कामकाज अपने जीवन को व्यतीत करने के लिए,
घर या घर से  बाहर निकल कर बेझिझक कर पाती,

मेरी जिंदगी के किताब के हर पन्ने शिक्षा बिना
कोरे और हुनर बिना, बिखर कर रह गए, माँ .... ।

# अनाथ बच्चे

जिनके माता-पिता नहीं होते, वो बड़े बदनसीब होते है।

ऐसे बच्चों की परवरिश कर हम
उन्हे बदनसीबी से बचा सकते है। जिनके माता-पिता ......

ऐसे बच्चों को खुशी देकर हम
अपनी मानवता निभा सकते है। जिनके माता-पिता.......

ऐसे बच्चों से कभी मिलकर हम
उन्हे सही सलाह दे सकते है। जिनके माता-पिता......

ऐसे बच्चों को प्रेम दे कर हम
उन्हे अपनी ममता दिखा सकते है। जिनके माता-पिता.........

ऐसे बच्चों को पढ़ा-लिखा कर हम
उन्हे योग्य नागरिक बना सकते है। जिनके माता-पिता.........

वो बड़े..... उन बच्चों की परवरिश
उन्हे बदनसीबी से उभार सकते है। जिनके माता-पिता........

# मासूम रिश्ते

बार-बार फूट-फूट कर  वो रो रही थी।
अपनी नाजुक प्यारी
बेटी के लिए और  बार-बार
चिल्ला&चिल्ला कर वो कह रही थी।

क्या कसूर था? मेरी प्यारी बेटी का
कहते-कहते नहीं वो थक रही थी।
अंकल आए, मेरे प्यारे अंकल आए,
खुशी से कहती जाती थी।

अंकल मेरे चाकलेट लाते
सबको घूम-घूम कर बताती थी।
फिर क्यो दरिंदे ने मेरी बेटी की
इज्जत पर हाथ लगाया था।

उससे भी जब जी न भरा तो
बेरहमी से पीटकर उसने गला
घोटकर उसको  मारा था।

पिटते हुए मेरी बेटी ने जरूर अंकल जी,
मेरे प्यारे अंकल जी, मत मारो मुझे
कह के बार-बार चिल्लाया होगा,
क्या? तब भी उसे अपने मानव
मासूम रिश्ते का महत्व नहीं  समझ आया था ।

# नीचे उतर आओ माँ

अब तो नीचे उतर आओ माँ,
ये ऊँचे पर्वत-पहाड़ो से।

देख धरा में मचा रखा,
हाहाकार फिर इंसानो ने।

तेरा आँगन भी रंग दिया,
कर के खून-खूनियो ने।

मासूम तक का कर दिया,
कत्ल वहशी बलात्कारियों ने।

आसिफा जैसी कई मासूमों को,
क्यों नहीं बचाया माँ तूने।

क्यों बनाया अपना दिल पाषाण,
अटल पर्वतो जैसे माँ तूने।

दहशत में जी रहा है यहाँ,
तेरी ही हर अनुपम कृतियाँ।

दरिंदों को सबक सिखा यहाँ,
रमा- भी करे आपसे विनतियाँ।

# देश को समृद्ध बनाए

आओ हम सब मिलकर आज
पुण्य भाव से एक दीप जलाऐं,
न हो अंधेरा मेरे भारत देश में
ऐसी प्रार्थना ईश्वर से कर जाऐं।

मिट्टी के दिए ही शुभ होते है,
यही बात हम सभी को बताऐं,
न खरीदे कोई विदेशी साम्रगी,
स्वदेशी सामान ही सब अपनाऐं।

न हो अब कोई खेल जुँआ का,
अँधेरी रात में ऐसा उपाय बताऐं।
न हो बर्बाद घर&द्वार किसी का,
ऐसी परंपरा को हम सब अपनाऐं।

एक दूसरे के प्रति भरी नफरते
राकेट में भर, जलाकर दूर भगाऐं।
फिर खुशी से गले मिलकर एक
प्रेम से भरी बाती का, दिया जलाऐं।

गरीब-अमीर के फासले कम हो,
न लुटे कोई अपना ऐसा देश बनाऐं।
ऐसी दिवाली का पर्व हो,
भारत देश को जो समृद्ध बनाऐं।

# कीमत

वो लोग क्या जाने,
आँसूओं की कीमत,
जिन्होंने लोगों का खून,
सरेआम बहाया है।

वो लोग क्या जाने,
नारियो की कीमत,
जिन्होंने इज्जत लूटना,
सरेआम बनाया है।

वो लोग क्या जाने,
किलकारी की कीमत,
जिन्होंने दूधमुँहो का खून,
सरेआम बहाया है।

वो लोग क्या जाने,
पुण्यकार्य की कीमत,
जिन्होंने पाप को अपना,
सरेआम धर्म बनाया है।

वो लोग क्या जाने,
मुस्कान-की कीमत,
जिन्होंने मासूमों की
हँसी को चुराया है।

# बचपन

बचपन तेरी मीठी यादें मुझे,
हर पल आज भी तड़पाती हैं।

तेरे संग बीता हर पल मुझे,
बहुत बड़ी खुशी दे जाती है।

तेरी अलहड़ मीठी बातें मुझे,
अपनों के करीब ले जाती थी।

नाना-नानी लाड़ करे मुझे,
दादा-दादी की लाड़ली थी।

मामा-चाचा प्रेम करे मुझे,
मामी-चाची मेरी दिवानी थी।

माँ-पिता प्यार करे मुझे,
भईया-बहन की दुलारी थी।
सखी-सहेली ठिठोली करे,
ऐसी प्यारी बचपन की यादें हैं।

# बेटी होती खुशियों का खजाना

मेरी नन्ही प्यारी बेटी,
मेरी खुशियो का
बड़ा “खजाना”।
इसे बचपन में मुझे जमाने से है बचाना।

मासूम बेटियों पर
आज शैतानी दरिंदे
टूट रहें है।
बेटियों को इंसान
न समझ हवस का
सामान समझ रहे है।
इस खजाने को मुझे संभालकर रखना होगा।

इसे मूल संस्कारों और
शिक्षा से भरपूर भरना होगा।
बेटियाँ भी ताज होती है,
यह मायके मे नाज और
सुसराल की लाज होती है।
यह है “खजाना”
अनमोल “रमा” इसे न अब कोई सताना।।

# किताब

हे आज के मानव तू,
चार किताबें पढ़कर भी रे।

तू न जब बन पाया,
आज सही इंसान रे।

तूने किया है बदनाम,
सब पोथी-पुराण रे।

अपने कर्मो से आज,
पढ़कर न पाया सही ज्ञान रे।

हमसे अच्छे वो अशिक्षित जो
रहते हैं गाँव-जंगल में रे।

इंसानियत दिखती और बसती,
उनके ही रग-रग में रे।

मानवता की सीख देख,
मिली उन्हें प्रकृति से रे।

वो प्रकृति की सेवा कर, रमा- जी रहे शान से रे।

# उनकी यादें

निकल गई थी मैं,
घर से उसे भूलाने के बहाने।

लेकिन लौटी जब फिर थी,
साथ उसकी सुनहरी यादें।

बैठी थी जब मैं,
ढलती शाम को नदी के किनारे।

न भुला पाई मैं,
उसको और उसकी ही यादें।

पानी की कल-कल में भी थी,
सिर्फ ही उसकी बातें।

छू रही थी जो लहरे मुझे,
दिला रही थी फिर उसकी यादें।

डूबता सूरज भी न ले
जा पाया उसकी यादें।

दे गया चाँदनी संग फिर
उसकी ही प्यारी-प्यारी यादें ।।

# संस्कार

घरों में नहीं होता,
अब ऐसा माहौल है।

बैठ बना रहे हो सास,
बहू और पास में हो नातन है।

अब तो हर घर, बस मकान
बनते जा रहे है, संयुक्त परिवार
से अब एकल परिवार हो रहे है।

माता&पिता को कहीं और रख
खुशियाँ मना रहे है और बाद में
अपने ही बच्चो से उम्मीद लगा रहे है।

संयुक्त परिवार की बात ही कुछ और होती थी,
सीख जाते थे बच्चे संस्कार बड़ो से अपने आप ही।

# चाँद पूर्णिमा का

ऐ पूर्णिमा के चाँद,
तेरी बात ही बेहद निराली होती है।
तू चमकता आसमान में है,
लेकिन वसुंधरा भी पूरी चमकती होती है।

तेरी शीतलता से ही सम्पूर्ण
धरा भी, पूरी शीतल होती है।
देखता है जो तुझे,
उसे अपनी ही महबूबा दिखती होती है।

जो विरह में रहता उसे तेरी चाँदनी,
तेरी ही बस जरूरत होती है।
डूबी रहती महबूबा भी करती बातें
और यादें भी तेरे संग ही वो खुश होती है।

तेरा जल, थल में जब होता इतराना,
तब और भी मिलने की प्यास बढ़ती जाती है।
ऐ पूर्णिमा के चाँद,
तुझे देख इच्छा रमा- की भी,
अपने प्रिये से मिलने को होती है।

# अपनों ने जीना सिखाया हैं

जिससे भी मैंने प्यार किया,
उसने ही बहुत रूलाया है।

गैरो की कोई बात ही नहीं,
हमें अपनों ने ही सताया है।

सीना ताने थे जब हम पीछे,
अपनों ने ही खंजर चलाया है।

पराए नहीं, हमारे अपनों ने,
यहाँ में बदनाम कराया है।

फिर भी मानती बहुत उनको,
उन्होंने ही आगे बढ़ाया है।

आज भी करती हूँ प्यार उनसे,
जिनको दिल में बैठाया है।

जैसे है सभी अपने है,
सबने ही जीना सिखाया है।

# गुरूओं को समर्पित

माता-पिता ही है भगवान,
जो ये एहसास करा दे।
बिखरे मोतियों को,
जो समेटना सिखा दे।

टूटे हुए रिश्तों को
जो जोड़ना सिखा दे।
प्रकृति परिवार की देन का,
जो महत्व बता दे।

धरती में एक पौधा ही
जो लगाना सिखा दे।
हर नर नारी की इज्जत
जो करना सिखा दे।

इंसान के रूप में जन्मे जो
उन्हे इंसानियत सिखा दे।
ऐसे ही गुरूओं को रमा
शत्-शत् नमन करती है।

# जरूरत

रातों को जाग-जागकर
वो उसे सुलाते थे।
उसकी सेहत के लिए,
खुद परहेज करते जाते थे।

उसकी खुशी का पहले
ध्यान रखा करते थे।
खुद रहे भूखे,
लेकिन  उसको खिलाया करते थे।

उसकी अच्छी शिक्षा के लिए,
वो घर अपना छोड़ शहर जा बसे थे।
पढ़ा-लिखा कर बना दिया, उसको बड़ा साहब
और किया खूबसूरत  लड़की से उसका विवाह,

आज बेटे की जरूरत हो गई थी पूरी।
उसने छोड़ आया अपने माता -पिता  को
फिर,
वृद्ध आश्रम की खोली।।

# खेल-मेरे ईश्वर मेरे अल्लाह

मेरे ईश्वर, मेरे अल्लाह,
मुझे तू अपना खेल बता।
क्यों बनाया तूने अमीर-गरीब,हम इंसानो के बीच ये बता।

मेरे ईश्वर, मेरे अल्लाह,
क्यों बैठाया तूने गरीब कीबेटी को बिन बिहाई घर, ये बता।

मेरे ईश्वर, मेरे अल्लाह,
क्यों आया हम लोगों के बीच, जाति - धर्म का बीज, ये बता।

मेरे ईश्वर, मेरे अल्लाह,
बेटियों की इज्जत भी जाति से क्यों करते हैं, लोग ये बता।

मेरे ईश्वर, मेरे अल्लाह,
क्यों बचाया तूने कातिलों को, हत्या की जिसने मासूमों की, ये बता।

मेरे ईश्वर, मेरे अल्लाह,
क्यों नहीं सुनता तू दीन दुखियों की,
चीखते हैं जब वो दर्द से, ये बता।

# उजाला

शहीद की माँ!
कहाँ से लाऊँ मैं उजाला,
जब मेरा चिराग ही बुझ गया है।

शहीद के पिता!
कहाँ से लाऊँ मैं उजाला,
जब मेरा प्रकाश ही चला गया है।

शहीद की बहन!
कहाँ से लाऊँ मैं उजाला,
जब मेरा रौशन ए दिया बुझ गया है।

शहीद का भाई !
कहाँ से लाऊँ मैं उजाला,
जब मेरा गर्व ए रोशन चला गया है।

शहीद की दोस्त!
कहाँ से लाऊँ मैं उजाला,
जब मेरा शान ए दीप बुझ गया है।

शहीद की पत्नी!
कहाँ से लाऊँ मैं उजाला,
जब मेरे जीवन का ताज चला गया है।

शहीद का बेटा!
कहाँ से लाऊँ मैं उजाला,
जब मेरा सूरज ही पूरा ढल गया है।

सैनिक अमर तो हो गया, लेकिन
परिवार को जिंदगी भर आंसू दे गया है।

# पुलवामा अमर शहीदो को नमन

सोचो शहीदो की माँओ को कैसा लगा होगा,
जब बेटो को गोद से अंतिम विदा करा होगा।

सोचो शहीदो के पिता को कैसा लगा होगा,
जो बेटा देता कंधा उसे जब कंधा दिया होगा।

सोचो शहीदो की बहन को कैसा लगा होगा,
रक्षा करने वाला भाई जब कफन में दिखा होगा।

सोचो शहीदो की पत्नी को कैसा लगा होगा,
भरी आँखो से आखिरी बार
जब चूम कर विदा किया होगा।

सोचो शहीदो की मंगेतर को कैसा लगा होगा,
डोली लाने वाले
की अर्थी को जब खुद ने विदा किया होगा।

सोचो शहीदो के दुग्धमुँहे उन बच्चो का,
जिन्होंने बिना देखे पिता को मुखाग्नि दिया होगा।

# हादसे

दिल दहलाने वाले
आजकल तो हादसे होते हैं,
कुछ इंसानो से,
कुछ  प्रकृति के, ये किए होते हैं ।

इन हादसों से
हम सबको सबक लेना चाहिए,
आज जो हैं हालात,
उसे आज, अभी से ही सुधारना चाहिए।

हादसों की मार से
हुए हैं जो आज अनाथ, बेसहारा,
उनको भी दान देकर
थोडा सा ही सही, पुण्य कमाना चाहिए।

सहयोग बोलने और
भाषण में चिल्लाने से,
कुछ नहीं होगा, आज इसकी शुरुआत हमें
दिल से मिलकर, बिना देर किये करनी चाहिए।

# खुद से वादा

आजतक मैंने, बीते कल के
दुख - दर्दो को याद कर&कर के
बार-बार बस आँसू बहाती ही नहीं,
बल्कि अपना पूरा भविष्य बर्बाद करती रही हूँ।

मुझे समझ आ गया,
क्यों मैं किसी के कारण
या किस्मत को दोष देकर
अपना जीवन दूसरो के ज्यादा
खुद तबाह करने में लगी रही हूँ ।

लेकिन ...
आज मैं खुद से वादा-करती हूँ,
अपना बचा जीवन अब न गवाऊँगी।
जो सीख मिली जिंदगी में उसे ध्यान में रख
और जो है मेरे अंदर छुपा हुनर उससे अपना
जीवन ही नहीं,

दूसरो की भी सहायता कर
बचा इस मानव रूपी
जीवन को पूरा सफल बनाऊँगी ।

# दुश्मनी फैल रही

न जाने आज फिर  मेरे प्यारे देश भारत को
किसकी बहुत बुरी नजर लग रही हैं।
देश के हर कोने-कोने पर
लूटपाट, दंगा, फसाद, लड़ाई,हर पल हो रही है।

नारी सम्मान कहने को  बस,
यहाँ छोटी-छोटी
बच्चियों की इज्जत हर दिन लूट रही है।
जाति-पाति, धर्म की खड़ी है, जो आज दीवार
लोगों में नफरत फैला कर
विश्व में देश को बदनाम कर रही है।

खाने-पीने, दवाइयों तक में
धीमा जहर मिलाया जा रहा है
और कहते बनाने लोग आजकल
उत्पादक क्षमता बहुत बढ़ रही है।

एक दूसरे को बिना जाने समझे ही
लगा रहे गन्दे इल्जाम,
बस, दुश्मनी ऐसे ही फैल रही है।

# न्याय के खुदा से विनती

काँप जाती है, रूह मेरी, जब सुनती,
पढ़ती और देखती हूँ, अपने ही देश में, सृष्टि की जननी।
अपनी ही प्यार -प्यारी छोटी मासूम
बच्चियों के साथ बलात्कार जैसे दुष्कर्म
अपने ही देश के जब व्यक्तियो के द्वारा किया जाता है।
तो सोचती हूँ, क्या? ये चीखे, ये दर्द कोई भी देवी-देवता,
ईश्वर, अल्लाह को सुनाई क्यों नहीं देता है।
क्या? खुदा तू भी इंसानो के जैसा हो गया है,
नहीं सुनता तू दीनों की बता ऐसा क्यों? तू हो गया है।
सुना था मैंने तेरे दरबार में सब इंसान समान होते है,
फिर ये कैसा तेरे रहते हो रहा है। तेरा ये जहान है,
कुछ तो रहम कर अपने इन मासूम कलियों पर, जो तेरी ही दी हुई
अनमोल देन है।
फिर क्यों? आई इसमें खरोंच, देख क्या बुरी इनकी हालत है।
क्यों माफ करता तू ऐसे महापापियों को जिनकी नीयत ही खराब है।
क्यो भेजता उन्हे बचाने वाले रिश्तो को, जिन्हे ऐसे दरिंदो को
बचाने की पड़ी होती है। न बन तू भी गुनाहगार ....
उन गुनाहगारो के साथ, जो ये गुनाह करते है।
न्याय कर तू न्याय कर, न्याय का तू खुदा है,
न हो अब इस पाक धरा में बेसहारो पर अत्याचार।
मासूम, भोले, गरीब इंसानो के साथ दुराचार।
ऐसी ही बस रमा- की विनती आपसे बारम्बार है।

# संकल्प

आओ हम सब मिलकर,
“संकल्प” करे,
भारत को समृद्ध बनायेंगे,
जाति - पाति ऊँच - नीच का,
भेदभाव दिल से,
सब खत्म कर,
भारत को,
“एकता देश” की,
“ख्याति” से
विश्व मे
“पहचान” करायेंगे।
यह कहने से नहीं
होगा साथियों,
हमें यह करके
दिखाना होगा,
“रमा” के साथ
“सहमत” होकर,
यह “संकल्प” को
पूरा करना होगा ।।

# माँ का दामन

अपने दामन, अपनी गोद से माँ, तुमने मुझे क्यों उतार दिया माँ,
जितने हम थे वहाँ महफूज माँ, डर को कभी ना जाने थे माँ,

तेरी गोद से दूर होकर माँ, आज पूरे हम डरे हुए है माँ,
तेरा दूध जितना अमृत था माँ, उस सी कोई चीज नहीं है माँ,

गोद तेरी मेरी दुनिया थी माँ, प्यार तेरा मेरी जन्नत थी माँ,
कहने को तो सब रिश्ते थे माँ, लेकिन समझा बस तूने था माँ

चोट लगी थी जब मुझको माँ, देखा तू भी बहुत रोई थी माँ,
मेरी गलती पर डाल परदा माँ, प्रेम से बाद में समझाती थी माँ,

बड़े होने पर समझ पाई माँ, तेरी महिमा बेहद निराली माँ,
रमा की ही नहीं , सबकी माँ, पहले प्यार का एहसास होती माँ।

## व्यक्तित्व दर्पण

नाम - सुश्री रमा देवी तेकाम

साहित्य उपनाम - रमा प्रेम - शांति

माता - श्रीमती शांति देवी तेकाम

पिता - स्व. श्री प्रेम सिंह तेकाम

जन्मतिथि - 05 जुलाई

वर्तमान पता - बालाघाट (म.प्र.)

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी साहित्य, समाजशास्त्र) बी.टी.आई.

कार्यक्षेत्र - शिक्षिका

सामाजक क्षेत्र - असहाय की मदद, गरीब बच्चों की शिक्षा हेतु सहयोग।

विद्या - कविता, गीत, गजल, लघुकथा, संस्मरण, आलेख।

मो.नं. - 8458932800

सम्मान - अंर्तराष्ट्रीय, राष्ट्रीय स्तर तक प्राप्त ।

अन्य उपब्धियाँ - खेल राष्ट्रीय स्तर, शिक्षा, सांस्कृतिक।

प्रकाशन - एहसास ए जिंदगी (काव्य संग्रह), आकाशवाणी बालाघाट द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रसारण, लोगजंग भोपाल की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन, वूमन आवाज एवं अन्य समाचार पत्रों में प्रकाशन

सम्मान - खेल कुद प्रतियोगिताओं में राष्ट्रीय एवं अन्तराज्यीय स्तर पर पद एवं सम्मान बाबू जगजीवनराम कला, संस्कृति एवं साहित्य अकादमी द्वारा वीरांगना सावित्री बाई राष्ट्रीय सम्मान, प्रतिमा रक्षा सम्मान समिति करनाल द्वारा राष्ट्रीय रत्न अवार्ड भारतीय दलित साहित्य अकादमी, धमतरी द्वारा खेल रत्न अवार्ड ,

लेखन का उद्देश्य - समाज मे फैली हुई कुरीतियों को दूर करना ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-85-7

मूल्य 60/-